

भारत छोड़ो आंदोलन

प्रलम्बिस के लयि:

भारत छोड़ो आंदोलन, महात्मा गांधी, स्वतंत्रता संग्राम, भारतीय राष्ट्रीय सेना ।

मेन्स के लयि:

भारत छोड़ो आंदोलन की सफलताएँ और वफिलताएँ ।

चर्चा में क्यों?

8 अगस्त, 2022 को भारत ने [भारत छोड़ो आंदोलन](#) के 80 साल पूरे कयि, जसि अगस्त क्रांति भी कहा जाता है ।

प्रमुख बदि

परचिय:

- 8 अगस्त, 1942 को [महात्मा गांधी](#) ने ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का आह्वान कयि और मुंबई में अखलि भारतीय कॉन्ग्रेस कमेटी के सत्र में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू कयि ।
- गांधीजी ने ग्वालिया टैंक मैदान में अपने भाषण में "करो या मरो" का आह्वान कयि, जसि अब अगस्त क्रांति मैदान के नाम से जाना जाता है ।
- स्वतंत्रता आंदोलन की 'ग्रैंड ओल्ड लेडी' के रूप में लोकप्रिय अरुणा आसफ अली को भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में भारतीय ध्वज फहराने के लयि जाना जाता है ।
- 'भारत छोड़ो' का नारा एक समाजवादी और ट्रेड यूनियनवादी [यूसुफ मेहरली](#) द्वारा गढ़ा गया था, जनिहोंने मुंबई के मेयर के रूप में भी काम कयि था ।
 - मेहरअली ने "साइमन गो बैक" का नारा भी गढ़ा था ।

कारण:

- [क्रेपिस मशिन की वफिलता](#): आंदोलन का तात्कालिक कारण क्रेपिस मशिन की समाप्ति/मशिन के कसिी अंतमि नरिणय पर न पहुँचना था ।
 - संदर्भ**: इस मशिन को स्टेफोर्ड क्रेपिस के नेतृत्व में भारत में एक नए संवधान एवं स्वशासन के नरिमाण से संबंधति प्रश्न को हल करने के लयि भेजा गया था ।
 - क्रेपिस मशिन के पीछे कारण: दक्षिण-पूरव एशिया में जापान की बढ़ती आक्रामकता, युद्ध में भारत की पूरण भागीदारी को सुनशिचति करने के लयि ब्रिटिश सरकार की उत्सुकता, ब्रिटन पर चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बढ़ते दबाव के कारण ब्रिटन की सत्तारूढ़ लेबर पार्टी के प्रधानमंत्री वसि्टन चर्चलि द्वारा मार्च 1942 में भारत में क्रेपिस मशिन भेजा गया ।
 - पतन का कारण**: यह मशिन वफिल हो गया क्योंकि इसने भारत के लयि पूरण स्वतंत्रता नहीं बल्कि विभाजन के साथ डोमिनियन स्टेटस की पेशकश की ।
- नेताओं के साथ पूरव परामर्श के बनिा द्वितीय वशि्व युद्ध में भारत की भागीदारी:
 - द्वितीय वशि्व युद्ध** में ब्रिटिश सरकार का बनिा शर्त समर्थन करने की भारत की मंशा को [भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस](#) द्वारा सही से न समझा जाना ।
- ब्रिटिश वशिधी भावना का प्रसार:
 - ब्रिटिश-वशिधी भावना तथा पूरण स्वतंत्रता की मांग ने भारतीय जनता के बीच लोकप्रयिता हासलि कर ली थी ।
- कई छोटे आंदोलनों का केंद्रीकरण:
 - अखलि भारतीय किसान सभा, फारवर्ड ब्लाक आदि जैसे कॉन्ग्रेस से संबद्ध वभिन्नि नकियाओं के नेतृत्व में दो दशक से चल रहे जन आंदोलनों ने इस आंदोलन के लयि पृष्ठभूमि नरिमति कर दी थी ।
 - देश में कई स्थानों पर उग्रवादी वसिफोट हो रहे थे जो भारत छोड़ो आंदोलन के साथ जुड़ गए ।
- आवश्यक वस्तुओं की कमी:
 - द्वितीय वशि्व युद्ध के परणामस्वरूप अर्थव्यवस्था भी बखिर गई थी ।

मांगें :

- फासीवाद के खिलाफ द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों का सहयोग पाने के लिये भारत में ब्रिटिश शासन को तत्काल प्रभाव से समाप्त करने की मांग की गई।
- भारत से अंगरेजों के जाने के बाद एक अंतरिम सरकार बनाने की मांग।

चरण: आंदोलन के तीन चरण थे:

- पहला चरण- शहरी विद्रोह, हड़ताल, बहिष्कार और धरने के रूप में चहिनति, जिसे जल्दी दबा दिया गया था।
 - पूरे देश में हड़तालें तथा प्रदर्शन हुए तथा शर्मिकों ने कारखानों में काम न करके समर्थन प्रदान किया।
 - गांधीजी को पुणे के आगा खान पैलेस (Aga Khan Palace) में कैद कर दिया गया और लगभग सभी नेताओं को गरिफ्तार कर लिया गया।
- आंदोलन के दूसरे चरण में ध्यान ग्रामीण इलाकों में स्थानांतरित किया गया जिसमें एक प्रमुख किसान विद्रोह देखा गया, इसमें संचार प्रणालियों को बाधित करना मुख्य उद्देश्य था, जैसे करिलवे ट्रैक और स्टेशन, टेलीग्राफ तार व पोल, सरकारी भवनों पर हमले या औपनिवेशिक सत्ता का कोई अन्य दृश्य प्रतीक।
- अंतिम चरण में अलग-अलग इलाकों (बलिया, तमलुक, सतारा आदि) में राष्ट्रीय सरकारों या समानांतर सरकारों का गठन किया गया।

आंदोलन की सफलता

भवषिय के नेताओं का उदय:

- राम मनोहर लोहिया, जेपी नारायण, अरुणा आसफ अली, बीजू पटनायक, सुचेता कृपलानी आदि नेताओं ने भूमिगत गतिविधियों को अंजाम दिया जो बाद में प्रमुख नेताओं के रूप में उभरे।

महिलाओं की भागीदारी:

- आंदोलन में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उषा मेहता जैसी महिला नेताओं ने एक भूमिगत रेडियो स्टेशन स्थापित करने में मदद की जिससे आंदोलन के बारे में जागरूकता पैदा हुई।

राष्ट्रवाद का उदय:

- भारत छोड़ो आंदोलन के कारण देश में एकता और भाईचारे की एक विशिष्ट भावना पैदा हुई। कई छात्रों ने स्कूल-कॉलेज छोड़ दिये और लोगों ने अपनी नौकरी छोड़ दी।

स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त:

- यद्यपि विरुद्ध 1944 में भारत छोड़ो आंदोलन को कुचल दिया गया था और अंगरेजों ने यह कहते हुए तत्काल स्वतंत्रता देने से इनकार कर दिया था कि स्वतंत्रता युद्ध समाप्त के बाद ही दी जाएगी, किंतु इस आंदोलन और द्वितीय विश्व युद्ध के बोझ के कारण ब्रिटिश प्रशासन को यह अहसास हो गया कि भारत को लंबे समय तक नयितरति करना संभव नहीं था।
- इस आंदोलन के कारण अंगरेजों के साथ भारत की राजनीतिक वार्ता की प्रकृति ही बदल गई और अंततः भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ।

आंदोलन की असफलता:

क्रूर दमन:

- आंदोलन के दौरान कुछ स्थानों पर हिंसा देखी गई, जो कि पूर्व नयिोजति नहीं थी।
- आंदोलन को अंगरेजों द्वारा हिंसक रूप से दबा दिया गया, लोगों पर गोलियाँ चलाई गईं, लाठीचार्ज किया गया, गाँवों को जला दिया गया और भारी जुर्माना लगाया गया।
- इस तरह सरकार ने आंदोलन को कुचलने के लिये हिंसा का सहारा लिया और 1,00,000 से अधिक लोगों को गरिफ्तार किया गया।

समर्थन का अभाव:

- मुस्लिम लीग, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और हिंदू महासभा ने आंदोलन का समर्थन नहीं किया। भारतीय नौकरशाही ने भी इस आंदोलन का समर्थन नहीं किया।
 - मुस्लिम लीग, बैटवारे से पूर्व अंगरेजों के भारत छोड़ने के पक्ष में नहीं थी।
 - कम्युनिस्ट पार्टी ने अंगरेजों का समर्थन किया, क्योंकि वे सोवियत संघ के साथ संबद्ध थे।

- हट्टू महासभा ने खुले तौर पर भारत छोड़ो आंदोलन का वरीध कया और इस आशंका के तहत आधकारक तौर पर इसका बहषिकार कया कऱ यह आंदोलन आंतरकऱ अव्यवस्था पैदा करेगा और युद्ध के दौरान आंतरकऱ सुरक्षा को खतरे में डाल देगा ।
- इस बीच सुभाष चंदर बोस ने देश के बाहर 'भारतीय राष्ट्रिय सेना' और 'आज़ाद हऱदऱ सरकार' को गठन कया ।
- सी. राजगोपालाचारी जैसे कई कॉन्ग्रेस सदस्यों ने प्रान्तीय वधायकऱ से इस्तीफा दे दया, क्योकऱ वे महात्मा गांधी के वचार का समर्थन नहीं करते थे ।

UPSC सवलऱ सेवा परीक्षा वगऱत वर्ष के प्रश्न (PYQ):

भारतीय इतहास में 8 अगस्त, 1942 के संदरभ में नमऱनलखऱतऱ कथनों में से कौन-सा सही है?

- (a) भारत छोड़ो प्रस्ताव AICC द्वारा अपनाया गया था ।
- (b) अधकऱ भारतीयों को शामिल करने के लयऱ वायसराय की कार्याकारी परषऱद का वसऱतार कया गया ।
- (c) सात प्रान्तों में कॉन्ग्रेस के मंत्रमऱंडलों ने इस्तीफा दे दया ।
- (d) द्वऱतीय वश्व युद्ध समाप्त होने के बाद क्रपऱस ने पूरण डोमनऱयऱन स्थऱतऱ के साथ एक भारतीय संघ का प्रस्ताव रखा ।

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- 8 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी द्वारा भारत में बरऱटऱशऱ शासन को समाप्त करने के लयऱ एक स्पष्टीकरण प्रस्तुत कया गया जसऱके तहत मुंबई में अखऱल भारतीय कॉन्ग्रेस समऱतऱ (All-India Congress Committee) के सत्र में भारत छोड़ो आंदोलन शुरु करने का आहवान कया गया । गाँधीजी ने ऐतऱहासकऱ ग्वालऱया टैंक मैदान में दयऱ गऱ अपने भाषण में 'करो या मरो' का नारा दया, जसऱ अब अगस्त क्रांऱतऱ मैदान (August Kranti Maidan) के नाम से जाना जाता है ।
- भारतीय परषऱद अधनऱयऱम 1909 या मॉरले-मऱटो सुधार बरऱटऱशऱ संसद का एक अधनऱयऱम था जसऱने वधऱन परषऱदों में कुछ सुधारों की शुरुआत की और बरऱटऱशऱ भारत के शासन में भारतीयों की भागीदारी को बढ़ाया । भारतीय परषऱद अधनऱयऱम, 1909 ने गवरनर जनरल को कार्याकारी परषऱद में एक भारतीय सदस्य को नामऱतऱ करने का अधकार दया, जसऱसे सतयेंदर सनऱहा को पहले भारतीय सदस्य के रूप में नयऱकृत कया गया । भारत सरकार अधनऱयऱम, 1919 ने परषऱद में भारतीयों की संख्या बढ़ाकर तीन कर दी ।
- द्वऱतीय वश्व युद्ध में भारत को जुझारू घोषऱतऱ करने की वायसराय लॉर्ड लनऱलथऱगो की कार्रवाई के वरीध में 1939 में कॉन्ग्रेस मंत्रालयों ने सात प्रान्तों में इस्तीफा दे दया । बरऱटऱशऱ सरकार ने कॉन्ग्रेस मंत्रयऱों के इस्तीफे से राहत महसूस की क्योकऱ वे ग्यारह प्रान्तों में से आठ को नयऱऱतरऱतऱ करते थे और सरकार के युद्ध प्रयासों को बाधऱतऱ करने की शकऱतऱ रखते थे ।
- द्वऱतीय वश्व युद्ध में भारतीय सहयोग प्राप्त करने के लयऱ मार्च, 1942 में बरऱटऱशऱ सरकार द्वारा क्रपऱस मशऱन को भारत भेजा गया था । इसकी अधयकषऱता सर स्टैफोर्ड क्रपऱस ने की थी । मशऱन की कुछ सफऱरशऱों में शामिल हैं:
 - एक डोमनऱयऱन स्थऱतऱ के साथ एक भारतीय संघ की स्थापना की जाएगी ।
 - भारत राष्ट्रमंडल के साथ अपने संबंधों को तय करने और संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय नकऱयऱों में भाग लेने के लयऱ स्वतंत्र होगा ।
 - युद्ध की समाप्तऱ के बाद एक नया संवधऱन बनाने के लयऱ एक संवधऱन सभा बुलाई जाएगी । अतः वकऱल्प (a) सही उत्तर है ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संदरभ में नमऱनलखऱतऱ घटनाओं पर वचार कीजयऱ: (2017)

1. रॉयल इंडयऱन नेवी में वदऱरोह
2. भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत
3. द्वऱतीय गोलमेज सम्मेलन

उपरोक्त घटनाओं का सही कालानुक्रमकऱ क्रम क्या है?

- (a) 1 - 2 - 3
- (b) 2 - 1 - 3
- (c) 3 - 2 - 1
- (d) 3 - 1 - 2

उत्तर : (c)

व्याख्या:

- **रॉयल इंडयऱन नेवी वदऱरोह:** यह फरवरी 1946 में शुरु हुआ, जब रेटगऱस के नाम से जाने जाने वाले गैर-कमीशन अधकारऱयऱों और नावकऱों के एक वर्ग ने बरऱटऱशऱ अधकारऱयऱों के खऱलऱफ वदऱरोह कया । यह बेहतर भोजन और आवास की मांग को लेकर हड़ताल के रूप में शुरु हुआ । सरदार वल्लभ भाई पटेल और मुहम्मद अली ज़ऱनऱना के हस्तकषेप से वदऱरोह समाप्त हो गया । वदऱरोहऱयऱों ने 23 फरवरी, 1946 को आत्मसमर्पण कर दया । महात्मा गांधी ने अगस्त 1942 में अंगरेजों के खऱलऱफ भारत छोड़ो आंदोलन नामक आंदोलन का एक नया चरण शुरु करने का फैसला कया । उन्होंने जनता को

'करो या मरो' का नारा दिया और उन्हें अहसिक तरीके से वरिध करने के लिये कहा। गांधी और अन्य नेताओं को जेल में डाल दिया गया था, लेकिन आंदोलन ने अपना काम कर दिखाया।

- **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन:** सितंबर 1931 से दिसंबर 1931 के दौरान लंदन में एक द्वितीय गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया था। यहाँ, गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) का प्रतिनिधित्व किया था। यह एकमात्र गोलमेज सम्मेलन था जिसमें कांग्रेस ने भाग लिया था। **अतः विकल्प (c) सही है।**

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/quit-india-movement>

